WitWaves
Journal of Multidisciplinary Research

International Peer-Reviewed E-Journal
E-ISSN: 3107-4235

Vol – 3
Issue – 2
Apr-Jun
2026

# समकालीन हिन्दी कहानियों में दलित विमर्श

**सुनीता कुमारी**[1, *]

[1]अतिथि व्याख्याता, हिंदी विभाग, टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह

https://doi.org/10.64175/wjmr.vol.3.issue2.8

Article Info

***Keywords:***

- *वैश्विक*
- *विमर्श*
- *आधुनिकता*
- *भूमंडलीकरण*
- *प्रयुक्त*
- *अन्योन्याश्रित*
- *प्रगतिशील*

Abstract

साहित्य किसी जाति, धर्म या वर्ग का साहित्य नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण मानवता की बात करने वाला साहित्य है। साहित्य ब्रह्मानंद सहोदर है, साहित्य वह सूरम्य रचना है, जो हृदय से निकल कर हृदय को ही प्रभावित करती है। साहित्य और सामाजिक जीवन का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। समाज जीवन, सामाजिक चेतना, सामाजिक परिवेश के साथ उसके बदलते चित्र को भी अंकित करने का कार्य साहित्य में हो रहा है। साहित्य समाज का दर्पण है। 'दलित' का शाब्दिक अर्थ है कुचला हुआ। दलित अर्थ व्यापक रूप में पीड़ित के अर्थ में प्रयुक्त होता रहा है। आज के संदर्भ में दलित का अर्थ होगा वह जाति या समुदाय जिसका अन्यायपूर्ण समाज व्यवस्था के कारण सवर्णों या उच्च जातियों द्वारा दमन हुआ है। जिनको दूषित किया गया है, रौंदा गया है। इस प्रकार दलित वर्ग में वे सभी जातियां सम्मिलित हैं, जो जातिगत सोपान क्रम में निम्न स्तर पर है और जिनको शताब्दियों से दबाकर रखा गया है। देशकाल के अनुसार दलित जातियों को विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है। जिनके लिए शुद्र, अछतू अंत्यज, हरिजन, अनुसूचित जातिर्यो आदि शब्दों का प्रयोग होता रहा है। साहित्य किसी जाति, धर्म या वर्ग का साहित्य नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण मानवता की बात करने वाला साहित्य है। साहित्य ब्रह्मानंद सहोदर है, साहित्य वह सूरम्य रचना है, जो हृदय से निकल कर हृदय को ही प्रभावित करती है। साहित्य और सामाजिक जीवन का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। समाज जीवन, सामाजिक चेतना, सामाजिक परिवेश के साथ उसके बदलते चित्र को भी अंकित करने का कार्य साहित्य में हो रहा है। साहित्य समाज का दर्पण है। 'दलित' का शाब्दिक अर्थ है कुचला हुआ। दलित अर्थ व्यापक रूप में पीड़ित के अर्थ में प्रयुक्त होता रहा है। आज के संदर्भ में दलित का अर्थ होगा वह जाति या समुदाय जिसका अन्यायपूर्ण समाज व्यवस्था के कारण सवर्णों या उच्च जातियों द्वारा दमन हुआ है। जिनको दूषित किया गया है, रौंदा गया है। इस प्रकार दलित वर्ग में वे सभी जातियां सम्मिलित हैं, जो जातिगत सोपान क्रम में निम्न स्तर पर है और जिनको शताब्दियों से दबाकर रखा गया है। देशकाल के अनुसार दलित जातियों को विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है। जिनके लिए शुद्र, अछतू अंत्यज, हरिजन, अनुसूचित जातिर्यो आदि शब्दों का प्रयोग होता रहा है।

## भूमिका

हर युग में साहित्य समाज के हित, चिन्तन और चिन्ताओं को समझने का प्रतिबिंबन रहा है। साहित्य ही हमारे जीवन, समाज और नियति को समग्रता से देखने, जानने एवं समझने की दृष्टि साहित्य से ही उत्पन्न होती है। इसलिए इस सत्य को साक्षी बनाकर ही साहित्यकार साहित्य सृजन से समाज की दशा एवं उसमें घटित घटनाओं को बताता है। साहित्य समय और समाज से प्रभावित होकर, समय और समाज को प्रभावित करके युवचेतना की अभिव्यक्ति कर समाज को दिशा, दशा और संभवनाएँ प्रदान करता है। यह और भी गर्व की बात है कि हमारी इस रचनात्मक विरासत की सर्जन घर्मित को निरन्तर समृद्ध व विस्तृत करने में कथाकारों ने भी अपूर्व योगदान दिया है उनकी लेखनी में संवेदनाओं का अतुलित खजाना होता है।

**शोध विस्तार**

वेदकाल से लेकर आज तक जातिप्रथा की व्यवस्था चलती आ रही है। आज साहित्यिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, वित्तीय आदि क्षेत्र में बदलाव हो रहे हैं। लेकिन जाति व्यवस्था के अतंर्गत उतनी मात्रा में बदलाव नहीं आया है। आदमी किसी जाति में ही जन्म लेता है, जीवनयापन करता है और जाति के साथ ही मरता है। लेकिन मरने के बाद भी उनकी जाति नहीं मरती। इस संदर्भ में डॉ. सुशीला टाकभौरेजी का वक्तव्य सटीक लगता है- "हिंदू समाज व्यवस्था में जाति ऐसी चीज़ है जो इन्सान के जन्म के साथ ही जुड़ जाती है और वह इन्सान के मरने के बाद भी नहीं जाती है।"1 इस वक्तव्य से यह पता चलता है सूरज जब तक रहेगा तब तक यह जाति व्यवस्था स्थिर रहेगी। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लोगों को इस व्यवस्था के कारण से कष्ट उठाना पड़ रहा है। आधुनिक संदर्भ में, आदमी शिक्षा के कारण हर एक समस्या के प्रति विद्रोह की भावना अपनाता है। उसी प्रकार जाति प्रथा के प्रति भी इनकी विद्रोह की भावना तेज़ पकड़ती है।

लोकप्रिय दलित कहानीकार डॉ. सुशीला टाकभौरेजी के 'संघर्ष' कहानी में 'शंकर' नामक लड़के को दलित होने के कारण बहुत संघर्ष करना पड़ता है। गाँव के कुछ लोग उनको अछूत मानते हैं। वह उसे अच्छा नहीं लगता। उनके मित्रगण उसके घर के अदंर नहीं आते और उन मित्रों के घर से उसे भगाते हैं। इस अपमान के बदले में वह जानबुझकर उन लोगों के घर के अदंर प्रवेश करता है। छुआ-छूत मानने वाले लड़कों से बदला लेना चाहता है। राह में चलते समय शंकर अपने सवर्ण मित्रों को अपनी टांग अड़ाकर गिराकर मन ही मन खुश हो जाता है।

इसी प्रकार डॉ. दयानंद बटोही जी के 'भूल' कहानी में भी जातिप्रथा के प्रति विद्रोह की भावना उभरकर आयी है। जैसे कि इस कहानी के नायक रमेश और नायिका पार्वती अपने प्यार के संदर्भ में आड़े आने वाले जातिप्रथा के संदर्भ में अपनी चिंता व्यक्त करते हुए रमेश कहता है कि- "पारो वह दिन कब आयेगा जब समाज में जाति भावना का नाश हो मानवता पराकाष्ठा पर होगी, काश हम दोनों के लिए जाति न होती।"2

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के कहानी 'सपना' में भी जातिप्रथा की विरोध भावना उभरकर आयी है। सवर्ण लोग गौतम नामक दलित आदमी से पूरे मंदिर का निर्माण कार्य कर लेते हैं। जब मंदिर में बालाजी की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में जब गौतम अपने परिवार के साथ आकर आगे की पंगत में बैठता है तो सवर्ण उसका विरोध करते हैं। गौतम इनके क्रूरता से क्रोधित होकर पंडाल गिराकर जाति के प्रति विद्रोह व्यक्त करता है। वाल्मीकि जी के 'प्रमोशन' कहानी में दिनेशपाल जाटव उर्फ़ दिग्दर्शन पहले स्वीपर बनके काम करता था। बाद में प्रमोशन होकर 'मज़दूर' बन जाता है तो सवर्ण लोग मानने को तैयार नहीं होते। इनको सभी स्वीपर के रूप में ही देखते हैं। इस व्यवहार से दिनेशपाल जाटव क्रोधित होकर इस प्रकार बताता है- "स्वीपर था, अब नहीं हूँ... अब मैं मज़दूर हूँ... कामगार... मज़दूर-मज़दूर भाई-भाई ... इंक़लाब ज़िन्दाबाद।"3

'रिहाई' कहानी में छोटे छुटकू के माँ-बाप को गोदाम के मालिक लाला गोदाम के अदंर काम करने के लिए गुलाम के रूप में रख लेता है। जब इन दोनों का देहांत हो जाता है तो इनका बेटा छुटकू इसका बदला लेना चाहता है। वह एक दिन गोदाम के मालिक के कार का पीछा करते गोदाम तक पहुँचता है। गोदाम में प्रवेश करके पूरे गोदाम को आग लगा देता है। 'कूड़ाघर' कहानी में अजबसिंह को एस.सी होने के नाते मकान मालिक घर से निकाल देता है- "मकान खाली कर दो.... तुम लोगों ने मकान किराए पर लेते समय यह नहीं बताया था कि तुम एस.सी हो।"4

शिक्षित सवर्णों के इस कथन से अजबसिंह का खून उबल आया था। उसने कहा-"बताया नहीं... मतलब.... उस समय तो बहुत प्रगतिशील बन रहे थे...अरे तुमने पूछा होता तो हम बताते... यह तो कोई बात नहीं हुई।"5 आगे पत्नी से कहता है- "इनसे जितना डरकर बात करेंगे ये हमें दबाने की कोशिश करेंगे। तुम इनकी फ़ितरत नहीं जानती। जात-पाँत के सवाल पर ये सब इकट्ठे हो जाएँगे, चाहे आपस में जितना एक-दूसरे के ख़िलाफ़ लड़े।"6 अजबसिंह के शब्दों में पूरे सवर्ण जाति के प्रति विद्रोही भावना स्पष्ट होती है।

'शवयात्रा' कहानी में सुरजा के द्वारा पक्का मकान बनाना गाँव के प्रधान जी बलरामसिंह को अच्छा नहीं लगता। उनका कहना था कि "अटीं में चार पैसे आ गए तो अपनी औक़ात भूल जाता है। बल्हारों को यहाँ इसीलिए नहीं बसाया था कि हमारी छाती पर हवेली खड़ी करेंगे... वह ज़मीन जिस पर तुम रहते हो, हमारे बाप-दादाओं की है। जिस हाल में हो... रहते हो... किसी को एतराज़ नहीं होगा। सिर उठा के खड़ा होने की कोशिश करोगे तो गाँव से बाहर कर देंगे।"7 बलराम सिंह का एक-एक शब्द तीर की तरह सुरजा पर लगा था।

'सुरंग' कहानी में कहानीकार डॉ. दयानंद बटोही ने अपने जीवन में घटित घटना का चित्रण किया हैं। बटोही एस.सी होने के कारण सवर्ण लोग उसे साहित्य में पी-एच.डी रेजिस्ट्रेशन करने नहीं देते। बटोही से कहते हैं- "क्योंकि आप सेकेंड क्लास एम.ए हैं। मार्क्स कम हैं रिसर्च नहीं कर सकते।"8 मार्क्स कम होने का कारण बताकर पी-एच.डी करने की उनकी इच्छा का गला घोंट देते हैं।

' बैल की खाल' कहानी में अशिक्षित भूरे को ग़रीबी से व्यक्त जीवन अच्छा नहीं लगता। वह बैठे-बैठे अपने छुटकू के शिक्षा के बारे में सोचता हुआ अपने अतीत को याद करता है जैसे- "न जाने कितनी बार स्कूल के पास खड़े होकर उसने छोटे बच्चों को पहाड़े रटते देखा था। जब वे एक सुर में बोलते थे तो उसे बहुत अच्छा लगता था। वह सोचता था कि किसी दिन उसका छुटकू भी इसी तरह बच्चों के बीच खड़ा होकर पहाड़े रटेगा।"9

भूरे अपने बेटे को स्कूल भेजकर उसे अच्छी शिक्षा दिलाने और अपने बेटे को बड़े-बड़े कारख़ाने में नौकरी करते हुए देखने की इच्छा से छुटकू को स्कूल में प्रवेश कराने का निर्णय लेता है। लेकिन पैसों के अभाव में नहीं कर पाता है।

'घुसपैठिये' कहानी में भी शिक्षा के क्षेत्र में शोषण का चित्रण है। मेडिकल कालेज में शिक्षा प्राप्त करना दलित छात्रों के लिए कठिन है-"मेडिकल कालेज की जो हालत हैं उसमें हमारे लिए पढ़ाई जारी रखना दिन-प्रतिदिन कठिन हो रहा है। ये साल हमने जिन यातनाओं के साथ गुज़ारें हैं हम ही जानते हैं।

कई बार तो लगता था पढ़ाई छोड़कर वापस लौट जाएँ लेकिन माँ-बाप की उम्मीदें, रास्ता रोककर मजबूर कर देती हैं। उन सब यातनाओं के साथ पढ़ाई जारी रखना बहुत तकलीफ़ देता है.. एक दिन तो मैंने आत्महत्या तक कर लेने का निश्चय कर लिया था।"10 दलित छात्र अमरदीप के इस कथन में निराशा और हताशा की भावना व्यक्त है। उसके अतंस में गूँजती चित्कार साफ़-साफ़ मुल पड रही थी।

मेडिकल कालेज में प्रवक्ताओं में भी दलित छात्रों के प्रति भेदभाव करना, सवर्ण छात्रों को आतंरिक परीक्षा में ज़्यादा से ज़्यादा अकं देना और अछूतों को कम अकं देना आदि के बारे में नितिन मेश्राम का कहना है- "इतना ही नहीं प्रेक्टिकल की परिक्षाओं में भी भेदभाव बढता जाता है। न क्लास अटेंड करता है न प्रेक्टिकल। फिर भी त्रिवेदी सर उसे ही सबसे ज़्यादा अकं देते हैं। अटेंडेन्स की भी समस्या नहीं होगी।"11 इस प्रकार घुसपैठिये कहानी में छात्रों में होने वाले शोषण का चित्रण किया गया है।

'सिलिया' कहानी में आक्रोश का सुंदर चित्रण हुआ है। युवा नेता सेठ जी विज्ञापन द्वारा शूद्र वर्ण की लड़की से विवाह करने का विचार प्रकट करता है तो सिलिया सेठ जी के ढोंग पर अपना आक्रोश व्यक्त करती है और सोचती है कि- "हम क्या इतने लाचार हैं? आत्मसम्मान रहित हैं? हमारा अपना भी तो कुछ अहंभाव है, उन्हें हमारी ज़रूरत है, हमको उनकी ज़रूरत नहीं, हम उनके भरोसे क्यों रहे अपना सम्मान हम खुद बढ़ाएँगे।"12 यहाँ सिलिया सेठ से शादी करके दया का पात्र नहीं बनना चाहती। सिलिया अपना सम्मान और गौरव को बनाए रखना आवश्यक मानती है।

'संघर्ष' कहानी में शंकर को सहपाठी सवर्ण मित्र, मिलकर पीटते हैं। अवसर मिलने पर वह उससे बदला लेता है। शंकर के मन में आक्रोश उभरकर आता है तो शंकर चाहने लगता है कि- "उसके पास भी अमोघ शक्तियाँ हो जिससे वह अपनी दुश्मनों को आग में जलाकर भस्म कर दें, आँधी, तूफ़ान द्वारा उन्हें आसमान में तिनकों की तरह उड़ा दे, प्रलय की बाढ़ में बहाकर मानव सभ्यता से दूर फेंक दे, उन सबको रस तल में पहुँचा दें।"13 'टिल्लू का पोता' कहानी में बूढ़े किसान हरिसिंह को पता चलता है कि भंगिया - चमार जाति के हैं तो वह कुएँ के पानी खींचने नहीं देता। बदले में उन्हें जाति के नाम पर कुछ बोलने लगता है। उसे सुनकर कमला का सुर्ख चेहरा और आँखें अगांरों सी दहकने लगते हैं। कमला आक्रोश के साथ बच्चों को बाजूओं में पकड़ कर खींचते हुए आक्रोश में कहती है- चलों... ये पानी नहीं ज़हर है। अपने घर जाकर पीयेंगे... नहीं चाहिए आपका मीठा पानी..।"14 कमला का आक्रोश देखकर किसान हरिसिंह सहम जाता है। सोचने लगता है कि भंगिन इस तरह उसे बेइज्ज़त करती है।

'साज़िश' कहानी में नत्थू एक अछूत लड़का है। जब बैंक मैनेजर इसे पिगरी लोन देने तैयार हो जाता है नत्थू घर आकर सारी बातें अपनी पत्नी शांता से बताता है। शांता को मैनेजर की साज़िश मालूम हो जाती है। वह दूसरे दिन कुछ अन्य प्रतिनिधियों सहित मैनेजर से मिलकर लोन के बारे में पूछती है तो मैनेजर की बात सुनकर आक्रोश में बोलने लगती है। "बस कीजिए मैनेजर साहब। अपनी भलाई की बात अब हम खुद सोच लेंगे। आप कष्ट मत कीजिए सदियों से आप लोग सोचते रहे हैं हमारे लिए। अब आप आराम कीजिए। अपना नफ़ा नुकसान हम खुद समझेंगे। ग़लत करके ही लोग सीखते हैं। हमें गुमराह मत कीजिए। आप अपने बेटे को पिगरी का लोन देकर प्रशिक्षित करें तो अच्छा रहेगा। पिछले हफ़्ते आपने क्या कहा था और अभी कैसे बात कर रहे हैं गिरगिट की तरह रंग बदलना तो कोई आप लोगों से सीखे।"15 यहाँ शांता, मैनेजर को बताना चाहती है कि पिछड़े लोगों को इस प्रकार की साज़िश में फँसाने का कुविचार छोड़ दें।

'ख़ानाबदोश' कहानी में जब सुबेसिंह की बुरी नज़र सुखिया की पत्नी मानो पर पड़ती है। एक दिन सुवह आते ही भट्ठी की मुंशी से दफ्तर बुला भेजता है तो उसी भट्ठी में काम करने वाला जसदेव सकिया के आक्रोश को देखकर वह खुद अचम्भित हो जाता है।

**निष्कर्ष**

उपरोक्त विश्लेषण से यह कहा जा सकता है कि समकालीन कथाकारों ने अपनी कहानियों में दलित चेतना की अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों ही देखने को मिलती है। अनुभूति की गहराई में बिम्ब, प्रतीक और मिथक की हकीक़त को उजागर करती है उनकी सृजन चेतना। न केवल उजागर करती है बल्कि नवीन अर्थबोध को भी उत्पन्न करती हैं। असमानता, विषमता और उत्पीड़न-शोषण के हज़ारों सालों के इतिहास के पन्नों को परत-दर-परत उघारते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि ने समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, करुणा, मैत्री, प्रज्ञा, शील, गरिमा, अस्तित्व और अस्मिता हेतु भारतीय साहित्य, इतिहास और मानवीय विकास के सभी संसाधनों की सभ्यता समीक्षा को अनिवार्य मानते हैं। वे सभ्यता समीक्षा की प्रक्रिया और पद्धति से मानवीय सौन्दर्यबोध को स्थापित करते हैं। उनकी यह प्रक्रिया और पद्धति बुद्ध, फुले और डॉ.अम्बेडकर के चिंतन, दर्शन और संघर्ष पर आधारित है।

उपरोक्त कहानियों के विवेचन से स्पष्ट होता कि कहानीकारों ने दलित समाज के शोषण, पीड़ा, अन्याय, जातिवाद के व्यवहार एवं विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण बहुत ही स्पष्टता के साथ चित्रित किया है। इसके साथ ही समाज के लोगों की हीन मानसिकता को यर्थाथ रूप दिया है । उनके कहानियों की कथा दलित समाज को जागृति का संदेश देती है। डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर के क्रांतीकारी विचार दलितों को आत्मचेतना को प्रेरणा देती है।

**सन्दर्भ सूची**

1. टाकभौरे, डॉ. सुशीला - संघर्ष, पृ.सं.16
2. बटोही, डॉ. दयानंद - सुरंग, पृ.सं.52
3. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - प्रमोशन, पृ.सं.48

4. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - कुडाघर, पृ.सं.57
5. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - कुडाघर, पृ.सं.57
6. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - कुडाघर, पृ.सं.58
7. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - शवयात्रा, पृ.सं.39
8. बटोही, दयानंद - सुरंग, पृ.सं.10
9. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - बैल की खाल, पृ.सं.36
10. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - रिहाई, पृ.सं.79
11. वाल्मीकि, ओमप्रकाश - रिहाई, पृ.सं.80
12. टाकभौरे, डॉ.सुशीला - नई राह की खोज, पृ.सं.82
13. टाकभौरे, डॉ.सुशीला - नई राह की खोज, पृ.सं.82
14. टाकभौरे, डॉ.सुशीला - नई राह की खोज, पृ.सं.83
15. चौहान, सूरज पाल - साजिश, पृ.सं.43